



टिप्पणी

21

दैनिक जीवन में नैतिकता

एक सुन्दर मनोहर सुबह के समय गर्म चाय की प्याली के साथ-साथ एक समाचारपत्र भी मिल जाए तो उससे बेहतर कुछ नहीं है? किन्तु इन समाचारपत्रों में हम क्या पढ़ते हैं, लालसा, भ्रष्टाचार, भेदभाव, डकैती, या और ऐसे ही अनेक विषयों पर खबरें पढ़ते हैं। इनको पढ़कर हमें अपनी सुरक्षा और संरक्षा की चिन्ता होने लगती है। भारत को हमेशा से ही उच्च आचरण तथा नैतिक मूल्यों वाला देश माना गया है। क्या हमारा समाज, देश तथा स्वयं हम में होने वाला परिवर्तन हमारी इस विचारधारा में परिवर्तन कर रहा है? क्या हम उच्च मूल्यों की अपनी व्यवस्था को खो रहे हैं या यह मात्र वह चरण है जिससे हमारा देश गुजर रहा है।

हम सभी ने समान मूल्यों को ग्रहण किया है, इसके बावजूद हम में से कुछ ऐसे हैं जो सफलता के फटाफट रूप में अन्याय तथा अनैतिकता के मार्ग पर चल रहे हैं। क्या सदा ही नैतिक रूप से सही होना महत्वपूर्ण है?

आइए, इस पाठ में इन प्रश्नों और ऐसे ही अनेक प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास करें।



उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप:

- मूल्य तथा नैतिकता शब्दों के अर्थ का वर्णन कर पाएँगे;
- प्रतिदिन के जीवन में मूल्य तथा नैतिकता की आवश्यकता को जान पाएँगे;



चित्र 21.1

- अधिकारों और उत्तरदायित्वों, दोनों का ही आदर करने के महत्व को जान पाएँगे;
- श्रम की गरिमा को पहचान पाएँगे तथा उसका महत्व जान पाएँगे;
- सहिष्णुता, सहानुभूति तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की कला को सीख पाएँगे; और
- व्यक्तिगत आचार-संहिता को विकसित कर पाएँगे जो आपके अधिकारों और कर्तव्यों के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

21.1 मूल्य तथा नैतिकता

आसिफ एक शहर में टैक्सी ड्राईवर था। एक दिन एक यात्री का ब्रीफकेस उसकी गाड़ी में रह गया। आसिफ जब दोपहर का भोजन करने अपने घर जा रहा था तो उसकी नजर उस पर पड़ी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए?

उसने इस ब्रीफकेस को खोलने का विचार बनाया ताकि उस व्यक्ति का नाम व पता मिल सके। जब उसने ब्रीफकेस खोला तो वह उसके अंदर देख कर दंग रह गया क्योंकि उसमें अनेक मूल्यवान दस्तावेज तथा नकद पड़ा हुआ था। उसमें उसे एक कार्ड मिला जिसमें ब्रीफकेस के स्वामी का नाम व पता लिखा था। वह तुरन्त उस पते पर गया और उसने वह ब्रीफकेस वापस कर दिया। उसका स्वामी यह देखकर बहुत खुश हुआ और उसने आसिफ को उसकी ईमानदारी के लिए पुरस्कार भी दिया।



चित्र. 21.2

यह एक बहुत अच्छा गुण है जो बहुत कम दिखाई देता है। वह उस बैग से रोकड़ निकाल कर उस बैग को फेंक सकता था किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसके विवेक ने उसे ऐसा नहीं करने दिया और उसने सही निर्णय लिया। ईमानदारी वह मूल्य है जो आसिफ के पास है। आप यह सोच रहे होंगे कि मूल्य क्या होते हैं? ये कहाँ से आते हैं? क्या मूल्य नैतिकता से भिन्न होते हैं और ऐसे ही अनेक सवाल आपके मन में घूम रहे होंगे।

अब आप जान चुके हैं कि आसिफ एक ईमानदार टैक्सी ड्राईवर है। ईमानदार होने के साथ-साथ वह विश्वसनीय तथा जिम्मेदार भी है। वह अब इस बात के लिए जाना जाता है कि अपने यात्रियों के साथ बेईमानी नहीं करता। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि मूल्य वह अवधारणा है जिसे एक व्यक्ति धारण करता है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है और चेतना के विकास में सहायक होता है। आपकी चेतना आपकी आंतरिक पुलिस है। यह पुलिसवाला आपको आपके मूल्यों के आधार पर आपकी क्रिया के चयन में सहायक होता है। सुरेश आसिफ का मित्र है और उसके





टिप्पणी

मूल्य भिन्न प्रकार के हैं। वह प्रायः अनैतिक रूप से व्यवहार करता है और यात्रियों के साथ बेईमानी करता है। वह अपने यात्रियों को लंबे मार्ग से ले जाता है या अपने मीटर की रीडिंग में गड़बड़ी करता है ताकि उनसे अधिक पैसे वसूल सके। वह कई बार आसिफ से उसकी ईमानदारी को लेकर बहस करता है। आसिफ ने सुरेश को कई बार समझाया है कि व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक जीवन में सच्चाई के मार्ग पर चलना चाहिए। हर कार्यस्थल तथा व्यवसाय के कुछ नैतिक मूल्य होते हैं जिनका सदैव ही अनुसरण करना चाहिए। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जिन मूल्यों को हम धारण करते हैं उन्हीं के आधार पर हम अपने कार्य स्थल के नैतिक मूल्यों को समझ सकते हैं।

मूल्य वे विचार तथा अवधारणाएँ हैं जिन्हें हम विशेष गुणों के रूप में धारण करते हैं और इन्हें हम बचपन से ही सीखते हैं। इन मूल्यों को हम अपने माता-पिता तथा अपने आस-पास के वातावरण से ग्रहण करते हैं। उदाहरण के लिए दूसरों की देखभाल करना एक मूल्य है। जबकि नैतिकता हमारे मूल्यों की जाँच करता है, यह वे तरीके हैं जिनका व्यवहार हम विभिन्न स्थितियों में करते हैं।



गतिविधि 21.1

जैसे-जैसे हम इस पाठ का अध्ययन करेंगे, वैसे-वैसे हम कुछ मूल्यों का अवलोकन कर पाएँगे। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण निष्ठा के साथ हाँ या ना में दें।

- | | |
|---|----------|
| 1. दूसरों की वस्तुओं को वापस करने में मुझे बुरा लगता है | हाँ/नहीं |
| 2. मित्र के बैग से पैसे निकालने से मेरी जेब भर जाती है। | हाँ/नहीं |
| 3. दीर्घ काल में ईमानदारी का फल अच्छा होता है। | हाँ/नहीं |
| 4. यदि मुझे कुछ अधिकार प्राप्त हैं तो मेरे कुछ उत्तरदायित्व भी हैं। | हाँ/नहीं |
| 5. मेरे मूल्य मुझे सही निर्णय लेने में सहायक होते हैं। | हाँ/नहीं |
| 6. अपने काम स्वयं करने में मुझे संतोष प्राप्त होता है। | हाँ/नहीं |
| 7. हर मुद्दे पर बुजुर्गों की सलाह मुझे अच्छी नहीं लगती है। | हाँ/नहीं |
| 8. जब दूसरे लोग परेशान होते हैं तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। | हाँ/नहीं |



टिप्पणी

जीवन के मूल्य

सौहार्दपूर्ण वातावरण को बनाए रखने के लिए हम में से हरेक के लिए निर्धारित मूल्यों को ग्रहण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनमें से कुछ मूल्य हैं:

- ईमानदारी व निष्ठा
- कार्य के प्रति आदर
- समयपालन, नियमितता तथा अनुशासन
- दूसरों के प्रति शिष्टाचार तथा नम्रता
- संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रयोग
- पहल करना
- कार्यों को पूरा करने में कुशलता

कार्यस्थल पर मूल्य

कार्यस्थल पर सौहार्दपूर्ण वातावरण को बनाए रखने के लिए हम में से हरेक के लिए निर्धारित मूल्यों को ग्रहण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनमें से कुछ मूल्य हैं:

- संगठन के प्रति ईमानदारी व निष्ठा
- सौंपे गए कार्य के प्रति आदर
- समयपालन, नियमितता तथा अनुशासन
- संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग
- सहकर्मियों के साथ शिष्टाचार तथा नम्रता
- कार्यों को पूरा करने में कुशलता
- नए कार्यों को करने में आगे रहना।

आप इस सूची को और बढ़ा सकते हैं:

क्या आपको नहीं लगता है कि जो विकल्प हम अपने दिन-प्रति-दिन के जीवन में चुनते हैं वे हमारी व्यक्तिगत नैतिकता पर आधारित होते हैं? हमारे सभी निर्णयों में हमारे मूल्य ही निर्धारक कारक होते हैं। यह हमारी क्रियाओं तथा व्यवहार के लिए आधार उत्पन्न करते हैं। आइए, समझने का प्रयास करें कि एक न्यायोचित तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए नैतिकता कितनी महत्वपूर्ण है।

21.2 नैतिकता की आवश्यकता तथा महत्व

आप रोजाना समाचार पत्रों में अनेक प्रकार की खबरें पढ़ते हैं जैसे भ्रष्टाचार, घूसखोरी, खाद्य मिलावट, अपहरण, हिंसा तथा हत्या आदि। हमारे समाज को यह क्या हो रहा है? लोग अपनी चेतना को मार कर पैसे के पीछे क्यों भाग रहे हैं? हमारे समाज में मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। कुछ लोग अनैतिक माध्यमों से संपत्ति का संचय तथा ताकत प्राप्त कर रहे हैं। अपने समाज में हम ऐसा क्यों होने दे रहे हैं? हम अपने समाज के इस पतन को रोकने के लिए मिल कर प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम में से हर एक व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में मूल्यों का अनुसरण करे। यदि इन मूल्यों का अनुसरण न किया जाए तो हमारे समाज का क्या होगा? आप ऐसे ही अनेक प्रश्नों के बारे में विचार कर सकते हैं:

- जीवन की हानि तथा जन संपत्ति को क्षति;



- परिवारों का विखंडन
- कानून और व्यवस्था की कमी
- अपराध तथा भ्रष्टाचार
- मदिरापान तथा नशीले पदार्थों का सेवन
- महिलाओं, बच्चों तथा समाज के अन्य संवेदनशील सदस्यों के साथ दुर्व्यवहार
- संसाधनों का अनुचित प्रयोग तथा बर्बादी।

यदि समाज के सभी सदस्य मूल्यों तथा नैतिकता का अनुसरण नहीं करेंगे तो समाज में पूर्ण रूप से असंतुलन तथा अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। चारों ओर अपराध तथा अनाचार फैल जाएगा और जीवन कठिन हो जाएगा। इसलिए, यह हमारा दायित्व है कि हम व्यक्तिगत रूप से नैतिकता का अनुपालन करें।

21.3 व्यक्ति के अधिकार तथा उत्तरदायित्व

अंकिता दसवीं कक्षा की विद्यार्थी है। वह चिड़चिड़ी है तथा उसमें बड़ों के लिए आदर नहीं है। वह कभी भी किसी काम में अपनी माँ की सहायता नहीं करती है और अपने पिताजी की बातों को नहीं सुनती है। बल्कि वह हर छोटी-बड़ी बात पर उनसे बहस करती है। वह अपने पड़ोसियों के साथ भी अशिष्ट रूप से व्यवहार करती है। उसके माता-पिता चाहते हैं कि वह जम्मेदारी के साथ काम करे तथा समझदार बच्चे की तरह व्यवहार करे।

हम सभी एक परिवार में रहते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से हमारा पोषण करता है। इस परिवार में हम अपनी क्षमताओं को विकसित करते हैं, एक दूसरे को स्नेह देते हैं और प्राप्त करते हैं पारिवारिक जीवन व्यक्ति को स्वस्थ संबंध स्थापित करने तथा उन्हें बनाए रखने का अवसर प्रदान करता है। परिवार में व्यक्ति महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल जैसे दूसरों की देखरेख करना, वस्तुओं को दूसरों के साथ बाँटना, सहिष्णुता तथा सहानुभूति को भी सीखता है।

एक दिन अंकिता के परिवार ने निर्णय लिया कि वह उसे उसकी गलती का अहसास दिलाएँगे। जब एक दिन अंकिता देर से सोकर उठी और स्कूल जाने के लिए जल्दीबाजी करने लगी। तब वह अपने चीजों के लिए दूसरों पर चीखने लगी लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। वह किसी तरह तैयार हुई और स्कूल देर से पहुँची। देर से आने पर उसे स्कूल में डाँट पड़ी।

जब अंकिता दोपहर में घर वापस आई तो, उसकी माँ ने उससे पूछा कि सुबह के अनुभव के बारे में उसे कैसा लगा। अंकिता को महसूस हुआ कि यदि वह इसी प्रकार से अशिष्ट, अनादरपूर्ण तथा असहयोग रूप से व्यवहार करेगी तो दूसरे भी उसके साथ इसी प्रकार व्यवहार करेंगे। क्या आपने भी कभी अंकिता की तरह व्यवहार किया है? आपको कैसा लगता यदि आपके परिवार के सदस्यों ने भी आपके साथ इसी प्रकार व्यवहार किया होता?



टिप्पणी

अंकिता ने अपनी गलती को महसूस किया और आपनी माँ से वादा किया कि भविष्य में वह जिम्मेदारी के साथ कार्य करेगी। अब अंकिता अपनी दादी के हर छोटे-मोटे कामों में मदद करती है। उसने अपनी दादी को मासिक जाँचों के लिए चिकित्सालय ले जाने की जिम्मेदारी ली है। उसने सब्जी वालों के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया है। इसलिए, हम समझ गए हैं कि एक परिवार में तथा एक समुदाय में सदस्य के रूप में हर व्यक्ति के कुछ अधिकार होते हैं और कुछ कर्तव्य। जब अधिकार और कर्तव्य एक साथ चलते हैं तभी समाज में चारों ओर शान्ति और सामंजस्य का वातावरण बना रहता है।

उत्तरदायित्व तथा अधिकार एक साथ चलते हैं और मैत्रीपूर्ण वातावरण के निर्माण में सहायक होते हैं

21.4 दूसरों की देख-रेख तथा आदर करना

स्वयं की जाँच करने तथा यह देखने के लिए कि क्या आप कभी दूसरों का निरादर करते हैं, निम्नलिखित छह प्रश्नों के उत्तर दें। इसके लिए कोई अंक प्रणाली नहीं है। आप स्वयं ही अपने संबंध में निर्णय लेंगे।

1. जब आप कमरे में प्रवेश करते हैं तो क्या आप हर एक व्यक्ति को प्रणाम करते हैं।
2. जब आप अपने मित्र के घर जाते हैं तो, वहाँ से वापस आते समय क्या आप बुजुर्गों को प्रणाम करके आते हैं।
3. जब आपके मित्र आपके घर आते हैं तो क्या आप उन्हें अपने परिवार के दूसरे सदस्यों से मिलाते हैं?
4. जब आप बुजुर्गों से बात करते हैं तो क्या आप अपनी आवाज ऊँची रखते हैं?
6. क्या आप अपनी माँ को बताए बिना बाहर जाने की योजना बनाते हैं या परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में सोचे बिना अपना पसंदीदा कार्यक्रम देखने के लिए टीवी का चैनल बदल देते हैं?
7. क्या आप महत्वपूर्ण दिनों में परिवार से दूर रहते हैं?

याद रखें कि :ये सभी निरादर के चिह्न हैं।

अंकिता ने अपने चचेरे भाई को यह प्रश्न करते हुए सुना, जो कि कुछ वर्ष पूर्व तक वह भी पूछा करती थी कि, मैं किसी का सम्मान केवल इस लिए क्यों करूँ वह मुझसे बड़ा है? लेकिन अंकिता के पास अब इस प्रश्न का उत्तर है। इसका साधारण-सा उत्तर है कि **व्यक्ति को सभी के प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, चाहे वह आपसे बड़ा हो या छोटा।**

सम्मान: दूसरों से सम्मान प्राप्त करने के लिए आपको भी दूसरों का सम्मान करना होगा

सम्मान दूसरों के प्रति प्रेम या आदर की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। यदि हम चाहते हैं कि **गृह विज्ञान**



टिप्पणी

दूसरे लोग हमारा सम्मान करें तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हमें भी उनका सम्मान करना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं है कि हमें दूसरों की बात को स्वीकार कर लेना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि हम दूसरों की बातों या दृष्टिकोणों से सहमत नहीं होते हैं। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि चाहे आप किसी के विचारों से असहमत हैं किन्तु इस असहमति की अभिव्यक्ति नम्रतापूर्वक की जानी चाहिए। प्रायः युवा वर्ग अपने बजुर्गों से असहमत होते हैं और इसी प्रकार के मतभेद मानव समाज में परिवर्तनों को जन्म देते हैं। तथापि, हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि **अपने विचारों की अभिव्यक्ति करना हमारा अधिकार है किन्तु इस अभिव्यक्ति को आदरपूर्ण प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य है।**

हालाँकि बड़ों का आदर करना महत्वपूर्ण है, किन्तु यदि आपको लगे कि वे आपके साथ सही व्यवहार नहीं कर रहे हैं या आपके आदर का अवांछित लाभ उठा रहे हैं तो अपने व्यवहार को विश्वसनीय बुजुर्गों तक सीमित रखें।



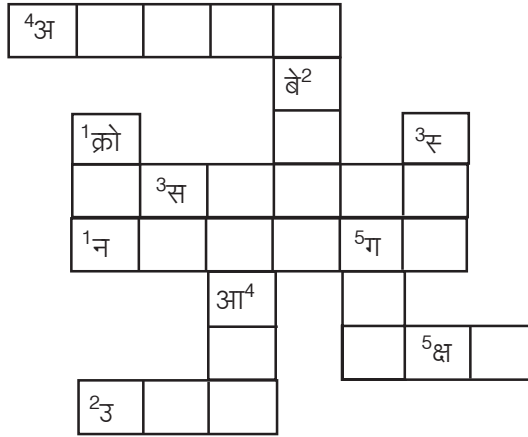
पाठगत प्रश्न 21.1

1. नैतिकता तथा मूल्य शब्दों को परिभाषित करें?

2. कुछ महत्वपूर्ण शिष्टाचार निम्नलिखित हैं। कॉलम 'क' को कॉलम 'ख' से मिलाएँ:

	क	ख
1.	जब दो लोग बात कर रहे हों	दूसरों से बात करें
2.	जब अपने माता-पिता से बात करें	पहले सोचें
3.	जिसे समूह में सभी के द्वारा समझा जा सके	बीच में न टोकें
4.	जब स्वयं के संबंध में बात कर रहे हों	कभी न बोलें
5.	जब आप समूह में बैठे हों	आदर करें।
6.	दूसरों के लिए बुरा	उस भाषा में बात करें
7.	आप बोलें	दयालु रहें।
8.	खुसफुस न करें	खुश रहें
		सफलतापूर्वक

3. क्रास वर्ड के उत्तर बताएँ:



टिप्पणी

नीचे की ओर (Down)

- जब आपको क्रोध आता है तो उस समय की भावना _____
- ईमानदारी का विपरीत है _____
- शीला _____ है, वह किसी के साथ अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति नहीं करना चाहती है।
- हमें सदैव ही अपने बुजुर्गों के प्रति अभिव्यक्त करना चाहिए _____
- हमें _____ भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सामने (Across):

- व्यक्ति की भाषा में _____ दर्शाता है कि व्यक्ति में शिष्टाचार हैं।
- महात्मा गाँधी एक _____ हृदय के व्यक्ति थे।
- दूसरों से सम्मान प्राप्त करने के लिए आपको दूसरों का _____ करना होगा।
- हम _____ विद्यालय में सीखते हैं।
- यदि आपने कुछ गलत किया है तो इसे माँगें _____



टिप्पणी

21.5 श्रम की गरिमा

राजन एक फल बेचने वाला है और सत्तर वर्षीय कृष्णा फुटपाथ पर काम करने वाला एक मोची है जो राजन की दुकान के साथ ही बैठता है। अपने कार्य पर गौरव करते हुए कृष्णा राजन से कहता कि वह मेरे काम में कोई कमी निकाल के दिखा दे। यदि राजन उसके काम में कोई गलती निकाल देता था तो वह पूरे जोश से उस काम को दोबारा करता और फिर उसकी जाँच के लिए राजन को दिखाता। एक बार राजन ने उससे पूछा कि जब उसके घर में तीन कमाने वाले सदस्य हैं तो उसे काम करने की क्या आवश्यकता है? कृष्णा ने उत्तर दिया कि वह गरिमापूर्ण तरीके से अपनी आजीविका अर्जित करना चाहता है।



चित्र: 21.3

हर प्रकार का कार्य मानवीय या बौद्धिक, श्रम कहलाता है। **श्रम की गरिमा (Dignity of labour) से तात्पर्य है कि सभी कार्यों को समान रूप से आदर दिया जाना चाहिए तथा कोई भी व्यवसाय दूसरे से उत्कृष्ट नहीं है।** दुर्भाग्यवश हम बौद्धिक कार्यों के साथ मूल्य को जोड़ने लगते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि आदर कार्य के प्रकार में नहीं बल्कि इस बात पर है कि कार्य किस प्रकार किया जा रहा है। ईमानदारी से अपना कार्य करने वाले जमादार का काम उस उच्च स्तरीय अधिकारी से अधिक सम्मानजनक है जो अपने काम की अनदेखी करता है तथा गलत माध्यमों से धन अर्जित करता है। विश्व के सभी धर्म श्रम की गरिमा की बात करते हैं। पैगम्बर की वह कहानी श्रम की गरिमा को स्पष्ट रूप से उजागर करती है कि जिसमें एक आदमी सहायता के लिए उनके पास आया था। पैगम्बर ने उस आदमी का बचा हुआ सामान, एक कंबल तथा चमड़े का एक बैग केवल दो दीनार में बेचा। उसने वह पैसा उस आदमी को दिया और कहा कि वह इससे एक कुल्हाड़ी खरीद ले, लकड़ी काटे और उसे बेचे तथा पंद्रह दिन के बाद वापस अपने पास आने को कहा। पंद्रह दिनों के पश्चात जब उस आदमी ने अपनी मेहनत से कमाए 20 दीनार दिखाए तो पैगम्बर ने कहा : तुम्हारे लिए यह काम भीख मांगने से बेहतर है। इसी प्रकार सिखों के प्रथम गुरु, गुरुनानक देव ने भी श्रम की गरिमा का उल्लेख किया है और श्रम की गरिमा से संबंधित उनकी पहली प्रचलित कहानी सैदनुर गाँव के एक अमीर जमीदार मलिक बाबू और उसी गाँव के एक गरीब बड़ई भाई लालू की है। कहानीकार कहता है कि उन्होंने मलिक बाबू के विविध व्यंजनों से भरपूर भोजन को छोड़ कर भाई लालू के घर सूखी रोटी खाई थी क्योंकि वह सूखी रोटी कड़ी मेहनत तथा ईमानदारी के साथ अर्जित की गई थी।

इसलिए, श्रम की गरिमा से तात्पर्य है कि व्यक्ति को सभी कार्यों को समान सम्मान देना चाहिए और किसी कार्य को दूसरे कार्य से अधिक श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए। दूसरों पर आश्रित रहने के स्थान पर स्वयं जीविका अर्जित करना बेहतर है वो भी ईमानदार माध्यमों से।



गतिविधि 21.1

प्रायः हम अपने प्रियजनों के महत्व को नहीं समझते हैं। हम परिवार के विभिन्न सदस्यों द्वारा खुशहाल परिवार के संचालन तथा उनके द्वारा किए जाने वाले घरेलू कार्यों के मूल्य को समझ नहीं पाते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि आपके माता-पिता तथा भाई-बहन आपके लिए क्या कुछ करते हैं? आइए, एक गतिविधि करें और देखें कि परिवार के सदस्य एक दूसरे के लिए क्या करते हैं और क्या हम उसी रूप में प्रतिक्रिया करते हैं:

वे आपके लिए क्या करते हैं?	आप उनके लिए क्या करते हैं?
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

क्या आप पाँच पंक्तियाँ लिख सकते हैं कि आप कैसा महसूस करते हैं जब आपके परिवार के सदस्य आपके लिए कुछ करते हैं?

21.6 धैर्य, सहानुभूति तथा सकारात्मक मनोवृत्ति

आप ऐसे लोगों को जानते होंगे जो अपने तकनीकी कौशलों में उत्कृष्ट हैं किन्तु अपने दल के सदस्यों या कर्मचारियों के साथ काम करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। इस प्रकार के लोग परिस्थितियों से निपटने तथा दैनिक जीवन की समस्याओं का सकारात्मक तथा ठोस उपाय करने में कठिनाई महसूस करते हैं। यद्यपि उनमें कुछ महत्वपूर्ण कौशलों का अभाव होता है जैसे प्रभावपूर्ण संप्रेषण, समस्या का समाधान खोजना, तनाव तथा मनोभावों से निपटना, अच्छे अंतर



टिप्पणी



टिप्पणी

व्यक्तिगत संबंधों को बनाए रखना या दल के सदस्यों तथा कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति रखना। ये सभी और इसी प्रकार के अनेक कौशलों को ही जीवन कौशल कहते हैं।

जीवन कौशल अनुकूल तथा सकारात्मक व्यवहार की वे क्षमताएँ हैं जो व्यक्तियों को प्रतिदिन के जीवन की समस्याओं और चुनौतियों से कुशलतापूर्वक निपटने के लिए सक्षम बनाती हैं।

अनुकूलन से तात्पर्य व्यक्ति का लचीलापन है जिसके कारण वह विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित कर लेता है। सकारात्मक व्यवहार से तात्पर्य है कि व्यक्ति अग्रसर होने वाला व्यक्ति है और कठिन परिस्थितियों में भी समस्याओं को खोजने के लिए आशा की किरण तथा अवसरों को खोज पाता है।

एक किसान के पास कुछ पिल्ले थे जिन्हें वह बेचना चाहता था। इसलिए उसने एक विज्ञापन जारी किया। एक छोटा बच्चा उन पिल्लों में से एक को खरीदना चाहता था। वे पिल्ले बहुत मंहगे थे और उस बच्चे के पास उतने पैसे नहीं थे कि वह उसे खरीद सके। उस बच्चे ने अपनी जेब में हाथ डालकर 10 रूपए निकाले और किसान को देते हुए कहा कि क्या मैं एक बार इस पिल्ले को देख सकता हूँ। किसान इस पर सहमत हो गया। बच्चा उन्हें देख कर बहुत खुश हुआ। अचानक उसने देखा कि एक पिल्ला लडखड़ाते हुए चल रहा है। तभी उस बच्चे ने कहा कि मुझे वह चाहिए। किसान ने उसे बताया कि वह पिल्ला कभी दौड़ नहीं पाएगा, उसके साथ खेल नहीं पाएगा क्योंकि वह लंगड़ाता है। बच्चा कुछ देर के लिए रुका और फिर उसने उसी पिल्ले को खरीदने की जिद की। ऐसा इसलिए क्योंकि जो चल या खेल नहीं पाते हैं उनके कम दोस्त होते हैं और वह बच्चा चाहता था कि वह पिल्ला अकेला न पड़ जाए। किसान उस बच्चे की दयालु भावना को देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने वह पिल्ला उस बच्चे को मुफ्त दे दिया।



चित्र: 21.4

यह संसार ऐसे लोगों से भरा हुआ है जिन्हें समझने के लिए किसी की आवश्यकता होती है। कितना अच्छा होगा यदि हम अपने आस-पास के लोगों के प्रति सहानुभूति करना आरंभ कर दें। **तदनुभूति या सहानुभूति में उन भावनाओं को पहचानने तथा आपसे में बाँटने की क्षमता है जो दूसरों के द्वारा अनुभव की जाती है। सहिष्णुता** एक अन्य कौशल है जो हमें समाज में शांतिपूर्ण रूप से रहने में सहायक होता है। **सहिष्णुता अपने स्वयं के विकल्पों तथा प्रक्रियाओं से भिन्न को स्वीकार करने की क्षमता है।** हम उन लोगों के बारे में आसानी से बता सकते हैं जो अपने व्यवहार में असहिष्णु हैं और दूसरों के लिए व्यापक स्तर पर समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। एक समाज में रहने के लिए हमें आपसी मतभेदों के प्रति सहिष्णुता की आवश्यकता होती है। तथापि, इसका यह अर्थ नहीं है कि हमें अन्याय तथा भ्रष्टाचार के प्रति उदासीन हो जाना चाहिए या अपने आस-पास की बुराइयों को स्वीकार कर लेना चाहिए। यद्यपि, गलत बातों के प्रति सहिष्णुता एक बड़ी बुराई है।



टिप्पणी

अच्छे जीवन के लिए सहानुभूति तथा सहिष्णुता के अतिरिक्त एक अन्य गुण की आवश्यकता होती है अर्थात् सकारात्मक दृष्टिकोण। सकारात्मक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप ही हमारी जीवन में सकारात्मक गतिविधियाँ होती हैं। एक बार एक बुजुर्ग और दुर्बल महिला एक रेस्ट्रॉ में गए और वहाँ के मालिक ने बड़े प्रेम तथा आत्मीयता के साथ उनका स्वागत किया। वहाँ बैठे दूसरे ग्राहक ने यह देख कर मालिक से पूछा कि वह बुजुर्ग महिला कौन हैं ? रेस्ट्रॉ के मालिक ने बताया कि स्कूल के दिनों में उसकी कक्षा सबसे शैतान कक्षा थी। श्रीमती गिल, हमारी कक्षा की नई विज्ञान अध्यापिका थीं। उसकी कक्षा ने अध्यापिका को परेशान करने के लिए हर संभव प्रयास किया। लेकिन उस अध्यापिका ने कभी भी किसी पर गुस्सा नहीं किया, चाहे बच्चे कितनी ही शैतानी क्यों न करते। माह के अंत में अध्यापिका अपने हाथों में कुछ कागज लेकर कक्षा में आईं। हर कोई डर रहा था कि अब उनकी परीक्षा का परिणाम बहुत बुरा होगा। किन्तु नहीं, यह उनके लिए चौकाने वाला था। अध्यापिका ने एक-एक करके सभी बच्चों को बुलाया। प्रत्येक कागज में उस विद्यार्थी का कम से कम एक गुण लिखा हुआ था। इससे पहले किसी भी अध्यापक ने ऐसा नहीं किया था। उसके बाद श्रीमती गिल ने हर महीने बच्चों के गुणों और अच्छे कार्यों पर बल देना शुरू कर दिया। रेस्ट्रॉ के मालिक ने बताया कि वह कक्षा का सबसे शैतान बच्चा था और वह किसी भी बच्चे को किसी भी क्षेत्र में अपने से आगे नहीं देखा सकता था। किन्तु तर्कवितर्क में उसकी हिम्मत तथा सुदृढता पर टिप्पणी करते हुए अध्यापिका ने उसे अपने शक्तियों को सकारात्मक दिशा में प्रयोग करने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार श्रीमती गिल ने कुछ बिगड़े हुए बच्चों को महान व्यक्तियों में परिवर्तित किया क्योंकि अब वे बच्चे स्वयं पर विश्वास करने लगे थे। इन विद्यार्थियों ने अपने सपने पूरे किए। लड़ाई, शराब तथा नशे में अपना जीवन बर्बाद करने की बजाय उन्होंने जीवन के प्रति स्वयं में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास किया।

सकारात्मक दृष्टिकोण हमें दिन-प्रति-दिन के जीवन से निपटने में सहायक होता है। यह आशावादी विचारधारा का सृजन करता है और हमें नकारात्मक सोच व चिंताओं से बचाता है। यह आपसी स्वस्थ संबंधों को विकसित करने तथा उन्हें बनाए रखने में भी सहायक होता है।

सहानुभूति, सहिष्णुता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण हमारे आस-पास विशेष देखरेख वाले लोगों की आवश्यकताओं को समझने के लिए भी जरूरी है। ये लोग शारीरिक तथा मानसिक रूप से अक्षम हो सकते हैं या बधिर या नेत्रहीन हो सकते हैं। यहाँ तक कि वरिष्ठ नागरिकों को भी स्नेह तथा देखभाल की आवश्यकता होती है। विचार करें क्या आप किसी प्रकार उनकी सहायता कर सकते हैं तथा/या उनके साथ कार्य कर सकते हैं।



पाठगत प्रश्न 21.2

1 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें।

1. क्या आपको लगता है कि केवल पिल्लों को देखने मात्र के लिए किसान द्वारा बच्चे से 10 रूपए लेना सही था?



टिप्पणी

2. आपके अनुसार बच्चे को कैसा महसूस हुआ होगा जब उसे यह पता चला कि उस पिल्ले का पैर खराब है?

3. क्या आपको लगता है कि यह बच्चे का साहस था कि उसने पीड़ित पिल्ले का चयन किया?

2. बताएँ कि आप निम्नलिखित विवरणों से सहमत हैं या नहीं। अपने उत्तर के पक्ष में कारण प्रस्तुत करें।

1. हम तभी दूसरों की देखरेख कर पाएँगे जब हम स्वयं सुखी तथा संतुष्ट होंगे।
सहमत/असहमत

2. केवल असहिष्णुता तथा उत्तेजना ही हमें वह सब दिला सकती है जो हमें चाहिए।
सहमत/असहमत

3. शिक्षा तथा सही पालन-पोषण मूल्यों का संवर्धन करते हैं। सहमत/असहमत

4. गरीब परिवार के बच्चों में मूल्य नहीं हो सकते हैं। सहमत/असहमत

5. शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए सहिष्णुता तथा सहानुभूति दर्शाना प्रमुख कारक हैं। सहमत/असहमत



गतिविधि 21.2

अपने आसपास विशेष आवश्यकता वाले लोगों को पहचानें। उनकी सीमाओं तथा चुनौतियों का अवलोकन करें। उनमें से किसी एक से पूछें कि आप उनकी दिन-प्रति-दिन की गतिविधियों में किसी प्रकार से मदद कर सकते हैं। विशेष आवश्यकताओं वाले लोगों के साथ अपनी समझ के आधार पर एक नाटक तैयार कीजिए। इस नाटक को अपने आस-पास के क्षेत्र में कीजिए और इस विषय पर जागरुकता उत्पन्न करने के लिए लोगों के साथ चर्चा कीजिए।



टिप्पणी



पाठगत प्रश्न 21.3

- 1 नीचे प्रस्तुत तालिका में निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक शब्द बताएँ। शब्द सीधी रेखा, खड़ी रेखा या उल्टी दिशा में हो सकता है।
 - क. विचार तथा विश्वास जो हम रखते हैं।
 - ख. हमें यह न केवल बुजुर्गों को बल्कि अपने से छोटों को भी देना चाहिए।
 - ग. जिस प्रकार हम कठिन परिस्थितियों में व्यवहार करते हैं जो हमारे मूल्यों की परीक्षा लेता है।
 - घ. दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना।
 - ङ. उन भावनाओं को समझने पहचानने तथा भागीदारी की क्षमता जो दूसरों के द्वारा अनुभव की जाती है।

का	र	स	च	ता	मी	कु	री
कू	झा	म्	तू	मू	गु	प्	त
मौ	ली	मा	फी	ल्	कि	षा	जा
प्रे	मी	न	ब	य	र	स	नू
म	झा	जा	प	र	वा	ह	खा
स	हा	नु	भू	ति	अ	न	पि
म्	ब	सा	यं	श	हा	शी	नु
मी	छ	जि	री	ण	न	ल	ट
ना	नी	मि	ता	र्थ	जू	ता	री
अ	र्ण	व	प्रि	शे	आ	व	ग



टिप्पणी

21.7 आपकी व्यक्तिगत आचार संहिता

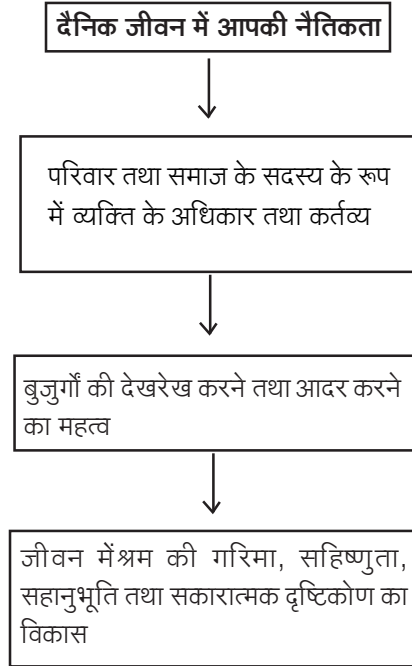
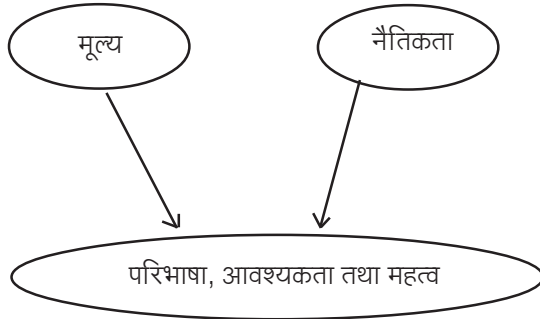
इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात, आइए देखें कि आपके सोचने के तरीके में कुछ परिवर्तन हुआ है। कुछ ऐसे प्रश्नों के उत्तर दीजिए जिनका अध्ययन आपने इस पाठ में किया है और इसकी तुलना अपनी पुरानी विचारधारा से करें व उन्हें लिख लें। सत्यनिष्ठा के साथ उत्तर दें कि निम्नलिखित परिस्थितियों में आप कैसा महसूस करते हैं:

1. दूसरों की चीजों को वापस करना मुझे अच्छा नहीं लगता है। हाँ/नहीं
2. अपने मित्र के बैग से पैसे निकालना। हाँ/नहीं
3. अंत में ईमानदारी का फल मीठा होता है। हाँ/नहीं
4. यदि मेरे कुछ अधिकार हैं तो उत्तरदायित्व भी हैं। हाँ/नहीं
5. मेरे मूल्य मुझे सही निर्णय लेने में सहायक होते हैं। हाँ/नहीं
6. अपने कार्य स्वयं करने से मुझे संतोष प्राप्त होता है। हाँ/नहीं
7. जब मेरे बुजुर्ग मुझे हर विषय पर सलाह देते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता है। हाँ/नहीं
8. दूसरे लोग जब कठिनाई में होते हैं तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। हाँ/नहीं

जो आपने सीखा है उसके आधार पर अपने लिए व्यक्तिगत आचार संहिता तैयार करें। आवधिक रूप से इस बात की जाँच करें कि क्या आप अपनी योजना का अनुसरण कर रहे हैं। चार महीने तक इस प्रक्रिया का अनुसरण करने के पश्चात आकलन करें कि क्या जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक हुआ है।



आपने क्या सीखा



टिप्पणी



यह आपके विकास में सहायता कर सकता है

आपकी अपनी आचार संहिता



पाठान्त प्रश्न

- 1 अपने दैनिक जीवन के उदाहरणों की सहायता से मूल्य तथा नैतिकता शब्दों को परिभाषित करें।
- 2 जहाँ अधिकार होते हैं वहाँ उत्तरदायित्व भी होते हैं टिप्पणी करें।
- 3 आपको ऐसा क्यों लगता है कि हमारे दैनिक जीवन में नैतिकता की आवश्यकता है?
- 4 उन सभी मूल्यों की सूची तैयार करें जिनका अध्ययन आपने इस पाठ में किया है।
- 5 कार्यस्थल की नैतिकता कर्मचारियों के लिए किस प्रकार लाभकारी है?
- 6 हम अपने बुजुर्गों के प्रति आदर किस प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं?



टिप्पणी

- 7 सभी कार्यों को समान महत्व/ आदर देना महत्वपूर्ण क्यों है?
- 8 हमें अपने आस-पास होने वाली हर घटना के प्रति सहिष्णु नहीं होना चाहिए, चर्चा करें।
- 9 हमारा सकारात्मक दृष्टिकोण हमें अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार सहायक होता है?
- 10 यह पाठ किस प्रकार आपकी अपनी व्यक्तिगत आचार-सहिता को विकसित करने में सहायक हुआ है?



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. मूल्य वे विचार तथा धारणाएँ हैं जो हम विशेष रूप में धारित करते हैं और जो हम अपने माता-पिता तथा आस-पास के वातावरण से प्राप्त करते हैं। एक कठिन परिस्थिति में हम वास्तव में जिस प्रकार व्यवहार करते हैं, वे हमारे मूल्य हैं।

2.

1.	ज
2.	छ
3.	क
4.	च
5.	ख
6.	ग
7.	घ
8.	ङ.



टिप्पणी

3.

4अ	नु	शा	स	न				
					बे ²			
1क्रो				ई		3रू		
ध	3स	रू	मा	न	वा			
1न	म्र	ता	नी	5ग	थीं			
		4आ		ल				
		द		त	5क्ष	मा		
2उ	दा	र						

4 विद्यार्थी अपने स्वयं के अनुभवों को लिख सकते हैं।

21.2

- विद्यार्थी को अपने स्वयं के अनुभवों से उत्तर देने होंगे।
- असहमत। दूसरों की चिंता करना एक मूल्य है जो मूड या परिस्थिति पर निर्भर नहीं करता है।
 - असहमत। उत्तेजना के कारण नकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।
 - सहमत। मूल्यों को विकसित करने में शिक्षा तथा अच्छी परवरिश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
 - असहमत। मूल्य इस पर आधारित होते हैं कि हम किसे सही या गलत समझते हैं, इसका हमारे धन से कोई संबंध नहीं है।
 - सहमत। सहिष्णु व्यक्ति शायद ही किसी से लड़ता हो, जिसके कारण शांतिपूर्ण वातावरण में निर्माण में सहायता मिलती है।

21.3

का	र	स	च	ता	मी	कु	री
कू	झा	रू	तू	मू	गु	प्	त
मौ	ली	मा	फी	ल	कि	षा	जा
प्रे	मी	न	ब	य	र	स	नू
म	झा	जा	प	र	वा	ह	खा
स	हा	नु	भू	ति	अ	न	पि
रू	ब	सा	यं	श	हा	शी	नु
मी	छ	जि	री	ण	न	ल	ट
ना	नी	मि	ता	र्थ	जू	ता	री
अ	र्ण	व	प्रि	शे	आ	व	ग